Release of Book

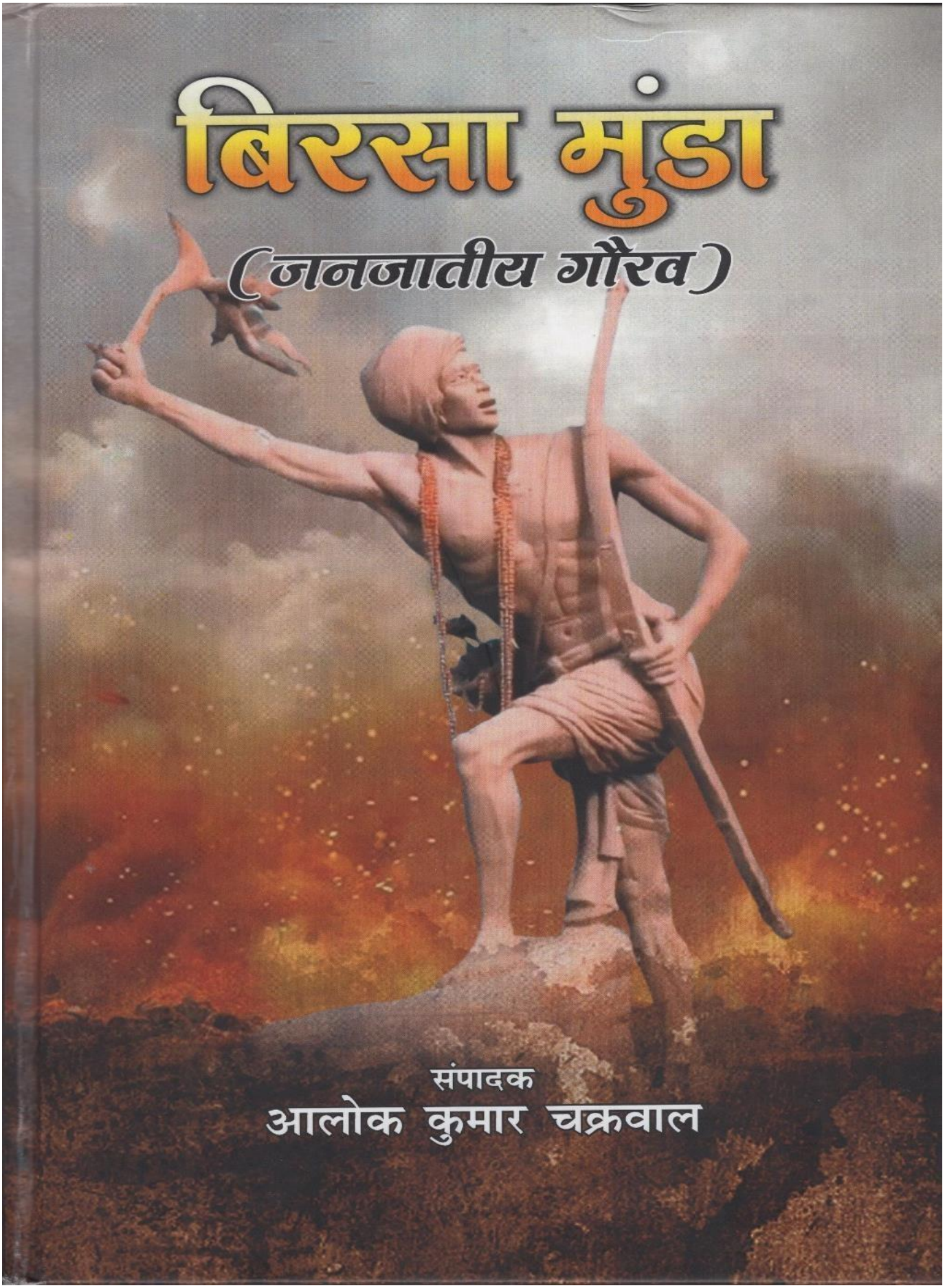

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल (जन्म 20 सितम्बर, 1969) वर्तमान में कुलपति, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ है। इससे पूर्व आप सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, गुजरात में वाणिज्य विभाग में प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। आप सौराष्ट्र विश्वविद्यालय में समन्वयक, आतंरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ और परीक्षा नियंत्रक के रूप में भी अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। आप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 30 वर्षों से अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। आप ऑक्सफोर्ड बिज़नेस स्कूल के पुराछात्र रहे है, साथ ही साथ आपने अमेरिका, इंग्लैंड, चीन, थाईलैंड और नेपाल की अकादमिक यात्रायें भी की हैं। वाणिज्य विषय में विशेषज्ञता के साथ-साथ आपकी साहित्य एवं इतिहास में गहरी रूचि रही हैं। प्रस्तुत कृति आपकी इसी रूचि का परिणाम है।

यह किताब...

बिरसा मुंडा के आर्विभाव को लगभग डेढ़ सदी एवं उनके तिरोभाव को प्राय: एक सदी हो गई है। कृतज्ञ राष्ट्र अपने इस स्वतंत्रता नायक को श्रद्धांजलि अर्पित करता रहा है। प्रस्तुत पुस्तक भी उनकी पुनीत स्मृति में श्रद्धा का एक पुष्प है। उन्होंने अपने जीवन, कार्यों एवं वाणी द्वारा जनजातियों को ऐसे समय में आत्मविश्वास दिया जब वह निराशा के समुद्र में डूबे हुए थे। बिरसा मुंडा अप्रतिम जन संचारक एवं असाधारण लोकनायक थे, जो भारतीय स्व-जागरण तथा प्रतिरोध के पर्याय रहे हैं तथा जनजातियों का चतुर्मुखी उत्थान चाहते थे और उनके कार्यों में राष्ट्रीय नवनिर्माण के सभी सूत्र मिल जाते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक कुल 30 अध्यायों में विभाजित है। इसमें विषय-विशेषज्ञों द्वारा बिरसा मुंडा के रूप में एक प्रखर राष्ट्रीय नायक के जीवन दर्शन, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक चिंतन का व्यापक अध्ययन करते हुए भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा के प्रतिरोध को यथासंभव रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

किताबवाले
22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग
अंसारी रोड, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002
वेबसाईट : www.kitabwale.com
ईमेल : kitabwale@gmail.com

Price : ₹ 2100.00
ISBN 978-93-90702-70-1
9 789390 702701

बिरसा मुंडा
जनजातीय गौरव

संपादक

सह-संपादक

संपादक-मंडल

डॉ. नीलकंठ पाणिग्राही

किताबवाले
—110002

अस्वीकरण

इस पुस्तक में लिखे और व्यक्त किए गए सभी विचार लेखकों के हैं, प्रकाशक किसी भी जानकारी की मौलिकता और पुस्तक में निहित सामग्री या पुस्तक में व्यक्त किए गए विचारों के लिए कोई जिम्मेदारी या दायित्व नहीं मानता है।

शीर्षक : बिरसा मुंडा (जनजातीय गौरव)

सम्पादक: प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल, प्रो. शैलेन्द्र कुमार

© सम्पादक एवं प्रकाशक

संस्करण : **2022**

ISBN : 978-93-90702-70-1

प्रकाशक :
किताबवाले
22/4735, प्रकाश दीप बिल्डिंग,
अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110 002

मुद्रक :
इन-हाउस (सैल्फ)
नई दिल्ली-110 002

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़, भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./ ५०४ /पीआरओ/रास/22
रायपुर, दिनांक ०५ मार्च 2022

—: संदेश :—

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि गुरू घासीदास विश्वविद्यालय द्वारा **"बिरसा मुंडा : जनजातीय गौरव"** पुस्तक प्रकाशित किया जा रहा है।

यह पुस्तक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बिरसा मुंडा के राजनीतिक, सामाजिक व स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षों में उनकी भूमिका से परिचय कराएगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक जनजातीय समाज के साथ–साथ विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को भी मार्गदर्शित करेगी।

"बिरसामुंडा : जनजातीय गौरव" पुस्तक के प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सुश्री अनुसुईया उइके)

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अमर नायक और 'उलगुलान' के प्रणेता बिरसा मुंडा जी के जीवन एवं विचारों पर केन्द्रित कृति का संपादन प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल द्वारा किया जा रहा है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध क्रांति की अलख जगाने वाले लोकनायक बिरसा मुंडा का नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। 15 नवम्बर, 1875 को झारखण्ड के उलीहातु गाँव में जन्मे बिरसा जी के मन में बचपन से ही ब्रिटिश सरकार के अत्याचारों और साहूकारों के शोषण के विरुद्ध आदिवासी समाज को जागृत करने की भावना पनप रही थी। अंग्रेज़ों द्वारा 'इण्डियन फॉरेस्ट एक्ट 1882' पारित कर आदिवासियों को जंगल के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। इस शोषण एवं ग़ुलामी से अपने लोगों को आज़ादी दिलाने के लिए बिरसा ने 'उलगुलान' (जल-जंगल-ज़मीन पर दावेदारी) की अलख जगाई और कृतज्ञ आदिवासी समुदाय ने उन्हें 'धरती आबा' अर्थात् 'धरती पिता' की उपाधि से विभूषित किया।

बिरसा जी ने 'अबुआ दिशुम, अबुआ राज' अर्थात् 'हमारा देश, हमारा राज' का नारा देकर आदिवासी समुदाय के स्वाभिमान, स्वतंत्रता एवं संस्कृति को बचाने के लिए व्यापक लड़ाई लड़ी। ईसाई मिशनरियों द्वारा आदिवासी समुदाय के धर्मांतरण के विरुद्ध बिरसा जी ने व्यापक अभियान छेड़ा और आदिवासी समुदाय को पुनः अपनी सनातन परम्पराओं की ओर उन्मुख किया। वर्ष 1897 से 1900 के मध्य बिरसा और तीर-कमानों से लैस उनके आदिवासी वीर सिपाहियों ने अंग्रेज़ों की नाक में दम करके रखा। जिस बिरसा को अंग्रेज़ों की तोप और बंदूक की ताकत नहीं पकड़ पाई, वे अपने ही लोगों के धोखे के कारण अंग्रेज़ों द्वारा बंदी बना लिए गए और 9 जून, 1900 ई. को उन्होंने रांची कारागार में अपनी अंतिम सांस ली। महज़ 25 वर्ष के अल्प जीवन में ही बिरसा मुंडा जी ने जिस क्रांति का आग़ाज़ किया था, वह सदियों तक मानवता का पथ-प्रशस्त करती रहेगी।

मुझे विश्वास है कि प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल द्वारा संपादित 'बिरसा मुंडाः जनजातीय गौरव' शीर्षक पुस्तक बिरसा जी के जीवन एवं विचारों को नए रंग से पाठकों के सम्मुख रखेगी। मैं पुस्तक के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

धर्मेन्द्र

(धर्मेन्द्र प्रधान)

MOE - Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-2346582
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

संपादक की कलम से

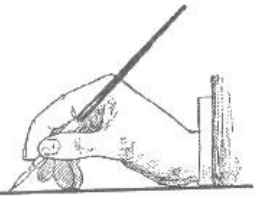

19वीं शताब्दी के भारतीय आकाश में नवजागरण के जो विविध स्वर गुंजायमान थे, उनमें से एक स्वर अवधूत जननायक का भी था, जिसका पश्चिम से कोई सीधा संपर्क नहीं था, राष्ट्रीय स्तर पर उसकी कोई पहचान नहीं थी, जो देश की मिट्टी से जन्मा था, जिसे गैरों का ही नहीं, अपनों के विरोध का भी आजन्म सामना करना पड़ा था और जिसने अपने जनजातीय संस्कृति के मूल स्रोतों की पहचान कर उसके प्रवाह को अवरुद्ध करने वाले सारे झाड़-झंखाड़ को एक झटके में उखाड़ फेंका था। यह अवधूत जननायक बिरसा मुंडा ही हमारे इस ग्रंथ के चरित् नायक हैं।

बिरसा मुंडा का जन्म तत्कालीन रांची जिला (वर्तमान ऊटी जिला) के उलीहातु नामक गांव में 15 नवंबर 1875 ई., दिन बृहस्पतिवार को करमी और सुगना मुंडा के घर हुआ था। चूँकि बृहस्पतिवार को बिरसावार कहा जाता है, इसलिए बच्चे का नाम बिरसा रखा गया। बिरसा बाल्यावस्था से ही तेजस्वी और सबके लिए आकर्षण का केंद्र थे। अंग्रेजी सरकार में दबाव के चलते बालक बिरसा के माता-पिता को ईसाई धर्म स्वीकार करना पड़ा, जिसके चलते बिरसा को भी ईसाई धर्म स्वीकार करना पड़ा।

जनजातीय स्वजागरण के अग्रदूत बिरसा मुंडा ने झारखंड के जनजातियों के सामाजिक उत्थान हेतु अनेकों कार्य किए। जनजातीय जीवन में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया तथा आधुनिकता को खुले हृदय से आत्मसात करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने जनजातीय धर्म में आडंबर एवं अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार करते हुए एक नए धार्मिक नीति संहिता के द्वारा उनका मार्गदर्शन भी किया। इतना ही नहीं, बिरसा ने जनजातीय जीवन के सौंदर्य को बनाए रखने हेतु जल-जंगल-जमीन की लड़ाई भी लड़ी और स्वयं को पर्यावरणीय चेतना के नायक के रूप में स्थापित किया। इसके साथ ही बिरसा मुंडा ने अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूंका तथा अंग्रेजों को नाकों चने चबाने हेतु विवश कर दिया। बिरसा मुंडा अपने अंतिम सांस तक स्वतंत्रता हेतु संघर्षरत रहे और अंग्रेजों के लिए संकट बने रहे। यही कारण है कि अंग्रेजों ने किसी भी तरीके से उन्हें अपने रास्ते से हटाना चाहा और उन्हें गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया, जहां 9 जून 1900 को उनकी संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु हो गई।

"बिरसा मुंडा : जनजातीय गौरव" पुस्तक कुल 30 अध्यायों में विभाजित है। इसमें विषय-विशेषज्ञों द्वारा बिरसा मुंडा के रूप में एक प्रखर राष्ट्रीय नायक के जीवन दर्शन,

सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा धार्मिक चिंतन का व्यापक अध्ययन करते हुए भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा के प्रतिरोध को यथासंभव रेखांकित करने का प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक "बिरसा मुंडा : जनजातीय गौरव" आपके हाथों में सौंपते हुए मैं हर्षित एवं उल्लासित हूं। मेरी कोशिश यह रही है कि प्रस्तुत पुस्तक का कलेवर विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के साथ-साथ सुधी पाठकों तक पहुंचकर, बिरसा मुंडा के संदर्भ में सभी अप्रकाशित विषयों के प्रति उनकी जिज्ञासा को तृप्त करने में सहायक सिद्ध होगी। प्रस्तुत पुस्तक अपनी सहज शैली, पठनीयता तथा अंतर्वस्तु के चयन के कारण वैचारिक जगत में अपना स्थान बना सकेगी—ऐसा मेरा विश्वास है। यह पुस्तक ना केवल बिरसा मुंडा के विषय में जानकारी देती है, बल्कि जनजातीय जीवन तथा उनके चुनौतियों पर भी व्यापक प्रकाश डालते हुए, तत्कालीन परिस्थितियों के संदर्भ में हमारे ज्ञान को समृद्ध करती है।

वास्तव में मुझे इस पुस्तक को संपादित करने की प्रेरणा माननीय शिक्षा मंत्री, भारत सरकार श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी से दिनांक 16/08/2021 एवं 17/11/2021 को उनसे हुई मुलाकात एवं जनजातीय विषय को लेकर हुई चर्चा से प्राप्त हुई। मै माननीय शिक्षा मंत्री जी के प्रति अपना विशेष आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस अमूल्य कृति हेतु अपने बहुमूल्य विचारों को कलमबद्ध करके इस पुस्तक में अध्याय के रूप में प्रेषित कर अपना बहुमूल्य योगदान देने के लिए मै सभी विद्वत लेखकों के प्रति अपना विशेष आभार व्यक्त करता हूं। लेखकों को इस ग्रंथ के लिए सामग्री-संकलन में अनेक स्त्रोतों से सहायता मिली है—मैं उनके प्रति भी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। मैं इस पुस्तक के सह-संपादक प्रो. शैलेन्द्र कुमार, कुलसचिव (कार्य.) एवं संपादक मंडल के सदस्य प्रो. प्रवीन कुमार मिश्रा, प्रो. नीलकंठ पाणिग्राही, डॉ. घनश्याम दुबे तथा डॉ. सुबल दास के प्रति अपना विशेष आभार व्यक्त करता हूँ। इसके साथ-साथ पुस्तक के प्रकाशन में किताबवाले, दरियागंज, नई दिल्ली के अमूल्य योगदान एवं तत्परता के लिए मैं उनका विशेष आभारी हूं।

पुस्तक को और अधिक उपादेय एवं प्रभावी बनाने में सुधी पाठकों एवं विद्वानों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित.....

प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल

कुलपति

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

अनुक्रमणिका

संदेश	सुश्री अनुसुईया उइके (माननीया राज्यपाल, छ.ग.)	(*iii*)
संदेश	धर्मेन्द्र प्रधान (माननीय मंत्री, भारत सरकार)	(*v*)
संपादक की कलम से		(*vii*)

1. **Birsa : Making of The Dharti Aba** 1
   Sanjay Kumar Sinha
2. **Bhagwan Birsa Munda: A Tribal Hero of Indian Adivasis** 10
   Kunal Kashyap, Priyanka, Subal Das
3. **The Ulgulan for Jal, Jangal and Jamin** 14
   Vipin Tirkey
4. **Birsa Munda and his Political Vision** 18
   Sudarshan Singh
5. **The Legend of The Ulgulan** 24
   Payal Singh
6. **Fir Se Kareu Ulgulan Re: An Analysis of Nagpuri Song Dedicated to Bhagwan Birsa Munda** 33
   Sirista Julita Meenz, Balram Oraon
7. **जनजातीय चेतना के महानायक बिरसा मुंडा** 37
   प्रवीन कुमार मिश्रा
8. **बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन : इतिहास लेखन, प्रकृति और प्रसांगिकता** 44
   रितेश्वर नाथ तिवारी
9. **आदिवासियों के भगवान बिरसा मुंडा : एक अध्ययन** 52
   शशिकांत पाण्डेय
10. **समकालीन संदर्भ में बिरसा मुंडा के चिन्तन की उपादेयता** 61
    प्रमोद कुमार, संजय यादव

11. **भारतीय प्रतिरोध का जननायक : अमर शहीद बिरसा मुण्डा** 70
अतुल कुमार मिश्र, सीमा पाण्डेय

12. **आदिवासियों के जननायक बिरसा मुंडा तथा उनका धर्म** 78
अनिल कुमार ठाकुर

13. **''बिरसाइत'' धर्म के जीवन संस्कार संबंधित प्रथाएँ: एक मानवैसानिक अध्ययन** 86
शीला पुरती, अबु हुरैरा अंसारी

14. **बिरसा मुंडा एवं राष्ट्रवाद** 90
प्यारेलाल आदिले, मनहरण अनन्त

15. **बिरसा मुण्डा का धार्मिक चिंतन और बिरसा धर्म** 96
घनश्याम दुबे, गुलजार सिंह ठाकुर

16. **समकालीन भारत में बिरसा मुण्डा और उनके जीवन दर्शन की प्रासंगिकता** 101
बिजय प्रकाश शर्मा

17. **औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष** 109
आशीष कुमार सिंह

18. **मुंडा जनजाति में स्वजगारण का द्योतक उलगुलान का स्वरूप** 115
अभिषेक कुमार तिवारी, घनश्याम दुबे

19. **जनजातियों में स्वचेतना का जागरण : बिरसा मुंडा** 122
सीमा पाण्डेय, गोविंद सिंह ठाकुर

20. **बिरसा मुंडा : सामाजिक-धार्मिक आन्दोलन के क्रांतिदूत** 127
घनश्याम दुबे, सचिन कुमार

21. **औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष** 136
आचार्य प्रदीप शुक्ला, अमर नारायण

22. **बिरसा मुंडा: दीकु, संघर्ष तथा स्वर्ण युग की संकल्पना** 142
प्रदीप शुक्ला, परिवेश कुमार बर्मन

23. **आदिवासियों के उत्थान का मसीहा बिरसा मुंडा** 153
सीमा पाण्डेय, सुभाष कुमार

24. **भारत के प्रतिरोध का इतिहास एवं बिरसा मुंडा** 158
गणेश कोशले

25. अप्रतिम जन-संचारक थे बिरसा मुंडा 166
धनंजय चोपड़ा

26. बिरसा मुंडा आंदोलन तथा उसके आर्थिक एवं सामाजिक कारण 171
तरुण कुमार

27. औपनिवेशिक भारत में बिरसा मुंडा का संघर्ष 177
अर्चना बौद्ध

28. आदिवासियों की स्वचेतना जागरण में बिरसा मुंडा का योगदान 185
नरेन्द्र

29. जन जातियों में स्वचेतना का जागरण : बिरसा मुण्डा 194
ओमप्रकाश सिंह प्रधान 'कुसरो'

30. बिरसा मुण्डा : सामजिक एवं राजनीतिक चिंतन 200
अनिमा लकड़ा, बलराम उराँव